करो और सीखो

मोहनलाल जाट

वर्तमान शिक्षा पुस्तकीय ज्ञान पर आधारित है। यह ऐसी शिक्षा है जो बालकों को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से दूर ले जा रही है। छात्रों को राष्ट्र के आर्थिक विकास और सामाजिक उन्नति में सहयोगी बनाने वाली नहीं है। इसलिए शिक्षा में बदलाव लाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था करनी होगी जो बालक के बौद्धिक विकास करने के साथ ही उसमें ऐसी क्षमताएं लाए, जो उसे आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता के साथ जीवन जीने के योग्य बना सके। शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे कक्षा, स्कूल और खेल के मैदान में ऐसा वातावरण तैयार कर पाएं, जिससे बालक का स्वस्थ सामाजिक विकास हो सके। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विद्या भवन कला संस्थान (बी.एस.टी.सी.) उदयपुर ने ''करो और सीखो'' कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें 20 छात्राध्यापकों ने भाग लिया।

कार्यशाला के पीछे सोच यह थी कि शिक्षक को शिक्षार्थी पर किसी भी प्रकार की जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिए। बालक स्वयं अपनी समस्या को सुलझाए। उन्हें केवल उसका मार्गदर्शन करना है। इस कार्यशाला के माध्यम से छात्राध्यापकों (भावी शिक्षकों) में स्वानुशासन, बालकेंद्रित शिक्षण सामग्री व गतिविधि निर्माण, विद्यालय प्रबन्धन, आत्मनिर्भरता, सहयोग, स्वावलंबन एवं परिश्रम आदि कौशलों के प्रति एक समझ बनाने की कोशिश की गई। हालांकि इस कार्यशाला के माध्यम से वे कितना सीख पाए, यह तो उनके कार्यक्षेत्र में जाने पर ही पता चल पाएगा।

कार्यशाला की शुरुआत एक खेल से की गई। बालक के सामाजिक विकास में खेलों का विशेष महत्त्व है। इसलिए छात्राध्यापकों के लिए एक ऐसे खेल का आयोजन किया गया, जिसमें वे ईमानदारी व स्वानुशासन का परिचय दे सकें। इस खेल को रखने के पीछे उद्देश्य यह था कि छात्राध्यापक स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हों और स्वानुशासन को समझ सकें तथा खेल की भावना के साथ एक दूसरे का सम्मान भी करें। इस खेल का नाम रखा गया 'राम–रावण'। खेल प्रारंभ करने से पूर्व खेल के नियम बता दिए गए। इस खेल में रावण समूह की जीत

हुई। जब दोनों समूहों ने हार जीत के कारणों का विश्लेषण किया, तो सारांश यह निकला कि नाम से कुछ नहीं होता। जीत उसकी होती है, जो ईमानदारी और अनुशासन से खेलता है। इस खेल में जानबूझ कर नियम अधिक रखे गए ताकि नियम तोड़ने वाले समूह के अंक काट दिए जाएं। खेल के अंक ईमानदारी और स्वानुशासन को दर्शाते हैं। नियम बताने के बावजूद 'राम समूह' ने सबसे अधिक नियम तोड़े थे, इससे उसकी हार हुई। राम समूह ने भी माना कि खेल में एक को हारना तय है और हार से भी सीख मिल सकती है। समझ यह बनी कि हम अध्यापक बनने जा रहे हैं, तो हमें विद्यालय में ऐसे खेलों का आयोजन करना चाहिए।

कार्यशाला के अगले क्रम में एक अन्य गतिविधि रखी गई, जिसमें छात्राध्यापकों को एक गोले में खड़ा किया और उनसे कहा गया कि एक आदर्श अध्यापक में क्या–क्या गुण होने चाहिएं? इस पर चिंतन करें। इस चिंतन में सभी छात्राध्यापकों ने एक–एक विशेषता बताई। इस प्रकार चर्चा में लगभग बीस ऐसी विशेषताएं निकलकर आईं। हर अध्यापक में कुछ विशेषता या गुण तो होने चाहिएं। वैसे तो, शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा विषय भी शामिल है लेकिन विद्यालय में उसे सैद्धांतिक रूप में पढ़ा कर केवल औपचारिकता पूरी की जाती है। आदर्श अध्यापक के बाद एक आदर्श विद्यालय कैसा हो? इस परिकल्पना पर आधारित गतिविधियां की गई।

विद्यालय की परिकल्पना के आधार पर छात्राध्यापकों से एक ऐसा कक्षा–कक्ष निर्माण करने को कहा गया, जिसमें 10 से 20 विद्यार्थी बैठ सकें तथा जहां बालकेंद्रित शिक्षण सामग्री हो। यह विद्यालय, पास के बरगद के पेड़ के नीचे बनाने को कहा गया। जिसकी न तो दीवार और न ही सामान्य सुविधाएं थीं। आस–पास की साफ–सफाई भी नहीं थी। साथ ही विद्यालय में कक्षा–कक्ष व शिक्षण सामग्री निर्माण पर गतिविधियां कराई गईं। सभी को एक पंक्ति में खड़ा किया और दो समूह बनाए गए। दोनों समूहों को किट दिए, जिसमें तीन दिन की कार्यशाला से संबंधित सामग्री थी। किट के साथ सामग्री की सूची भी दी। दोनों समूहों ने दो झाड़ू व दो–दो फोटो फ्रेम बना लिए और कक्षा–कक्ष की साफ–सफाई भी कर ली। दोनों गतिविधियां एक साथ इसलिए दी गई ताकि समूह में कार्य का विभाजन या प्रबंधन समझ सके तथा एक दूसरे में सहयोग करने की भावना का विकास हो सके।

शिक्षक पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हो एवं प्रकृति प्रेमी भी, इसलिए एक गतिविधि और करवाई गई। दोनों समूहों में पक्षियों के लिए परिंडे बनाने व बांधने पर स्पर्धा रखी गई। इसमें भी रावण समूह प्रथम आया। यहां एक समूह को दूसरे समूह का अवलोकन करने को कहा गया। यह फीडबैक आया

कि जिस समूह ने जल्दबाजी में परिंडा बनाया उसका परिंडा मजबूत नहीं बना है। हम चाहते थे कि यह भावना शिक्षक से विद्यार्थी में हस्तांतरित हो जाए और विद्यार्थी में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजगता बढ़े।

दूसरे दिन, छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास, सहयोग की भावना के लिए जंगल पर गतिविधि करवाई। जंगल के दृश्य के लिए परिसर के विशाल बरगद के इर्द–गिर्द एक दृश्य बनाया। पहले दो समूह बनाए और दोनों समूह में से एक–एक छात्र को छोड़कर बाकि सभी की आंखें बंद रखकर चलने को कहा गया। उन्हें निर्देश दिए गए कि जंगल में किसी भी प्रकार का शोर नहीं होना चाहिए। समूह में से जो देख कर चल रहा है, उसे अपने पीछे चल रहे साथी को कान में बताना है। दोनों समूहों को अलग–अलग दिशा में भेजा गया। जो देख कर चल रहा है, वह अपने साथी को संकट से अवगत करा रहा है कि आगे विकट मोड़ है, काटें हैं, यहां गुफा है, खड्ड़ा, पत्थर है आदि। सभी छात्राध्यापक बहुत ही धीरे–धीरे कदम रख कर चल रहे थे। उनके अनुभव इस प्रकार थे–

हम एक दूसरे का हाथ पकड़े डरे हुए से इस तरह चल रहे थे, जैसे वास्तव में घने जंगल में चल रहे हों। हमें डर लग रहा था कि कहीं पैरों के नीचे बिच्छू या सांप न आ जाए। हमारे समूह लीडर ने हर संकट से बचाया। वह हमें पूर्व ही सावधान कर देता था कि आगे किस प्रकार की विपदा है। इससे हमारा समूह लीडर पर विश्वास बढ़ा।

जंगल पर गतिविधि करवाने के बाद बालकेंद्रित गतिविधियां करवाईं। दोनों समूहों से लकड़ी व कागज से खिलौना बनाने को कहा गया। कागज व लकड़ी का खिलौना क्या हो? यह उन पर छोड़ा गया। दोनों समूहों ने अलग अलग प्रकार के खिलौने बनाए। एक लकड़ी से किसी जानवर की आकृति बनाई एवं कागज से नाव, हवा से चलने वाला पंखा व सांप की आकृति बनाई। इस गतिविधि के साथ ही दोनों समूहों को एक–एक बाल–पत्रिका बनाने को कहा गया। इसके लिए 30 मिनिट का समय दिया। बाल–पत्रिका बनाने के लिए हस्त लेखन व अखबार की कतरनों का प्रयोग किया।

बाल–पत्रिका में कार्टून, कविता, खेल, बच्चों के फोटो, अनमोल वचन, सुविचार, पक्षियों के फोटो, फूलों व बेलबूटों से संबंधित सामग्री तैयार की। इस गतिविधि से बाल–पत्रिका निर्माण का कौशल सिखा पाने में मदद मिली।

अगली गतिविधि वेस्ट से बैस्ट बनाने पर आधारित थी। दोनों समूह को सामग्री देकर पैन व ऑलपिन स्टैंड बनाने को कहा गया। कार्य छोटा हो या बड़ा उसके पीछे जो भावना व लगन है, वह महत्त्वपूर्ण

है। कई बार विद्यालय में शिक्षकों के पास खाली समय होने के बावजूद वे ऑफिस व कक्षाओं में पड़ी अव्यवस्थित चीजों को व्यवस्थित करने का समय नहीं निकाल पाते हैं। गतिविधि को कराने के पीछे मूल उद्देश्य यह था कि हर अध्यापक अपने विद्यालय को व्यवस्थित रखे और उपयोगी चीजें बना पाए।

अंतिम दिन, शेर व बकरी, पकड़ा–पाटी की गतिविधि के बाद ''हमारा विद्यालय कैसा हो?'' इस पर चर्चा की गई। कक्षा–कक्ष में अतिआवश्यक सामग्री क्या होनी चाहिए? उसकी सूची बनाने को कहा। सभी ने सूची बनाई। इनमें से कुछ सामग्री का निर्माण तो पिछले दिन करवा दिया गया था। कुछ सामग्री पर काम शुरू किया गया।

एक समूह ने सूचना पट्ट बनाने पर कार्य प्रारंभ किया। इसके लिए उन्हें कैनवास (कपड़ा) व सूई–धागा दिया गया। तुरपाई करके अलग–अलग रंग की शीट से सूचना को चिपकाकर तैयार किया। सूचना पट्ट पर सभी सदस्यों के नाम व कार्य विभाजन, समय सारणी को दर्शाया गया था।

दूसरे समूह ने टेबल कवर की सोची। इसके लिए उन्हें बंधेज का कवर बनाने के लिए पक्का रंग व गर्म पानी दिया गया। समूह ने अपने अनुसार डिजाईन में धागों से बांध कर पक्के रंग में भिगोकर सुखाने के लिए छोड़ दिया। समूह के अन्य सदस्यों ने अपने बॉक्स के जंग को घिस कर उस पर पेंट किया। दोनों समूहों ने चार–चार श्यामपट्ट के लिए गत्ते पर काली शीट को तैयार किया और चॉक से एक पाठ योजना पर लेखन कार्य भी कर दिया। कक्षा में कोटेशन, शिक्षाप्रद नारे शीट पर लिखे गए। दोनों समूहों को 45 मिनिट का समय देकर अपने कार्य की प्रदर्शनी लगाने को कहा गया। विद्यालय के नाम का बोर्ड और अपने विद्यालय की बाउंड्री धागे से बांध कर तैयार की गई। कक्षा के अंदर अखबार की फरियों व बच्चों से संबंधित क्राफ्ट की सामग्री से सजाया गया। इस प्रकार बनी अस्थाई कक्षा सुंदर व आकर्षक लग रही थी।

कार्यशाला की समाप्ति पर सभी ने अपने अनुभव सुनाए। निष्कर्ष निकला कि बच्चों को सिखाने के लिए पहले स्वयं तैयारी करें एवं ज्ञान किसी भी प्रकार का हो, यदि गतिविधि के माध्यम से देंगे तो बच्चों में वह स्थाई रहेगा एवं उन्हें आनंददायक तथा रुचिकर लगेगा। कक्षा में पढ़ने व पढ़ाने का वातावरण नीरस नहीं होगा और सिखाने व सीखने में मदद मिलेगी।

मोहन लाल जाट : विद्या भवन कला संस्थान, उदयपुर में कला शिक्षा पढ़ाते हैं।